शब्द भगवद्गीता में भी है : **अवजानन्ति मां मूढाः**, अर्थात् जो मूर्ख एवं मूढ़ हैं, वे ही भगवान् श्रीकृष्ण का उपहास करते हैं। भगवत्सेवाभाव से शून्य होते हुए भी ऐसे मूढ़ भगवद्गीता पर भाष्यों की रचना करते हैं। इसका परिणाम यह है कि वे 'भजने' और 'पूजने' में ठीक-ठीक भेद नहीं कर पाते।

भक्तियोग सम्पूर्ण योगों का अन्तिम फल है। अन्य योग तो वास्तव में भक्तियोग की प्राप्ति के साधनमात्र हैं। 'योग' का अर्थ वास्तव में 'भक्तियोग' ही है। ज्ञानादि अन्य योग भक्तियोग रूपी लक्ष्य की ओर ही अग्रसर करते हैं। स्वरूप-साक्षात्कार का विस्तृत पथ कर्मयोग से प्रारम्भ होकर भक्तियोग में समाप्त होता है। निष्काम कर्मयोग इस पथ का उपक्रम है। कर्मयोग के ज्ञान-वैराग्य में बढ़ जाने पर ज्ञानयोग में स्थिति होती है। जब विविध शारीरिक विधियों द्वारा चित्त परमात्मा विष्णु के प्रगाढ़ ध्यान में तन्मय हो जाता है, तो ज्ञानयोग ध्यानयोग में परिणत हो जाता है। अन्त में, अष्टांगयोग का उल्लंघन कर भगवान् श्रीकृष्ण की प्राप्ति होने पर लक्ष्यरूप भक्तियोग की उपलब्धि होती है। यथार्थ में भक्तियोग ही परम प्रयोजनीय तत्त्व है, परन्तु भक्तियोग के सूक्ष्म विश्लेषण के लिए इन अन्य योगपद्धतियों का ज्ञान आवश्यक है। अतएव इन योगों में क्रमशः उन्नति करने वाला योगी शाश्वत् सौभाग्य के सच्चे पथ पर चल रहा है। किसी एक स्तर पर स्थित रहकर आगे उन्नति न करने वाले को उस-उस स्तर के अनुसार कर्मयोगी, ज्ञानयोगी, ध्यानयोगी, राजयोगी, हठयोगी आदि कहा जाता है। परन्तु यदि कोई सौभाग्यशाली भक्तियोग तक पहुँच जाय तो समझना चाहिए कि उसने अन्य सब योगों का उल्लंघन कर लिया है। इस प्रकार कृष्णभावना की प्राप्ति योग की परमोच्च अवस्था है, उसी भाँति जैसे हिमालय विश्व के सर्वोच्च पर्वत हैं और उनमें भी एवरेस्ट शिखर सबका पर्यवसान है।

कोई दुर्लभ भाग्यशाली ही वैदिक विधान के अनुसार स्थित होने के लिए भक्तियोग के पथ को अंमीकार कर कृष्णभावनाभावित हो जाता है। आदर्श योगी श्रीश्यामसुन्दर के अनन्य ध्यान में तन्मय रहता है। श्रीकृष्ण श्यामसुन्दर इसलिए कहलाते हैं कि उनके श्रीविग्रह का वर्ण नवोदित मेध जैसा सौन्दर्य-सदन नीलाभ है, मुखारविन्द नित्य सूर्य के समान प्रफुल्लित है और श्रीअंग में वे उज्ज्वल परिधान, अलंकार एवं वैजयन्ती माला धारण किए हुए हैं। उनके श्रीअंग से बिखरती ब्रह्मज्योति नामक सर्वैश्वर्यमयी प्रभा से सब दिशायें आलोकित हो रही हैं। राम, नृसिंह, वराह तथा स्वयं कृष्ण रूप से वे अवतरित होते हैं, विशेषतः यशोदानन्दन के रूप में नराका अवतार ग्रहण करते हैं। इस प्रकार वे कृष्ण, गोविन्द, वासुदेव, आदि नामों द्वारा गीयमान हैं। वे पूर्ण बालक, पूर्ण पति, पूर्ण सखा और पूर्ण स्वामी के रूप में लीला करते हैं और समग्र ऐश्वर्यों और दिव्य गुणों के आश्रय हैं। जो श्रीभगवान् के इन दिव्य गुणादि से पूर्ण भावित है, वह परम योगी है।

वैदिक शास्त्रों का प्रमाण है कि योग-संसिद्धि की यह चरम अवस्था भक्तियोग के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है :